ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

डॉ. पी.एम. भुमरे

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.एम.बी.पी.के. महाविद्यालय, शंकरनगर, बिलोली, नांदेड़

Article Info: *(Recieved- 28/12/2025, Accept- 09/02/2026, Published- 10/02/2026)*

DOI- 10.70650/rpimj.2026v2i100004

भारतवर्ष और उसकी सांस्कृतिक महिमा विश्वविख्यात रही है। भारतीय संस्कृति का आशय है–सहानुभूति, विशालता, बिना स्थिर रहे ज्ञान का मार्ग ढूँढ़ते–ढूँढ़ते आगे बढ़ना तथा संसार में जो कुछ सत्यं शिवं और सुन्दरं दिखाई दे, उसे प्राप्त करके बढ़ती जाने वाली संस्कृति आदि। भारतीय संस्कृति संग्रह करने वाली है, सबको पास लाने वाली है तथा संकुचितता से दूरी बनाये रखने वाली है। भारतीय संस्कृति में त्याग, संयम, वैराग्य, सेवा, प्रेम, ज्ञान तथा विवेक आदि समाहित हैं।

आज हमारी संस्कृति रूपी परम्पराओं की गठरी में कुछ छोटे तथा बड़े छेद हो गये हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हमारे परम्परागत भारतीय मानव जीवन मूल्य इन छेदों से होकर मुट्ठी में बन्द रेत की भाँति सरकते चले जा रहे हैं। ''पश्चिमी भौतिकता का भूत, हमारे सत्यं, शिवं सुन्दरं के बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय में चुड़ैल बनकर बास कर चुका है। इसके कारण ही हम अपनी पहचान शनैः शनैः खोते चले जा रहे हैं। क्योंकि राजनीति ने धर्म को सम्प्रदाय में परिवर्तित कर दिया है। प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय, धार्मिक स्थलों, सांस्कृतिक स्थलों तथा प्रत्येक वर्ण जाति में साम्प्रदायिकता रूपी जहरीला रंग घोल दिया है।''[1]

इस भारतभूमि में प्राचीन काल से ही भिन्न–भिन्न संस्कृतियों का संघर्ष शुरू हो गया था। संस्कृति क्या है? संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के सम उपसर्ग तथा कृ धातु के संयोग से निर्मित है। '''सम' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में सुट् का आगमन करके 'सिन' प्रत्यय करने से संस्कृति शब्द की निर्मिति होती है।''[2] संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है– ''संस्कार युक्त होना, उन्नति करना, बढ़ना, विकसित होना, शुद्ध होना, शिष्ट होना आदि।''[3]

संस्कृति किसी भी देश की, किसी विशिष्ट काल की जीवन पद्धति, उसके आदर्श तथा उसको प्राप्त करने की विधियाँ एवं इस प्रक्रिया में होने वाले बाह्य एवं आंतरिक परिवर्तनों का लेखा–जोखा है। वास्तव में जीवन और जगत् के सभी आयामों के साथ–साथ विभिन्न कलाओं, ज्ञान–विज्ञानों–विद्याओं, जाति–वंश प्रथाओं एवं रीति–रिवाजों, मनोरंजन के साधनों, माप–विधियों, लोक–संस्कृति, शिक्षा–नौकरी, व्यवसाय आदि विभिन्न संस्थाओं यथा–कृषि–संस्था, गृह–उद्योग–संस्था, विवाह–संस्था तथा प्रसिद्ध तीर्थ एवं पर्यटन स्थलों आदि से सम्बद्ध विविध प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आयामों की समग्रता को ही संस्कृति कहा जा सकता है।

इसी को हम भारतीय संस्कृति एवं विरासत के संदर्भ में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं–भारतीय संस्कृति और विरासत रीति–रिवाजों, नैतिक सिद्धान्तों, कलाओं, धार्मिक मान्यताओं और ज्ञान की एक विशाल और विविध परम्परा है। यह परम्परा अति प्राचीन काल से समाज में प्रचलित है तथा पीढ़ी–दर–पीढ़ी गति कर रही है। यह मूर्त (स्थिर) स्वरूप में यथा स्मारक, शिला–लेख, मंदिर, झील, झरने, गुफाओं, कन्दराओं, पर्वत शिखरों, जल–प्रपातों तथा अमूर्त (अस्थिर) स्वरूपों, भाषाओं, लोक कथाओं, लोक–कलाओं, संगीत, त्यौहारों, पर्वों, उत्सवों, मेलों, बाजारों तथा पोशाक (वेशभूषा) खान–पान (भोजन) के स्वरूप में उपस्थित है। यह हमारे भारत महान की परिचायक हैं।

''भारतीय संस्कृति को कुछ वाक्यों में प्रकट करना उतना ही कठिन कार्य है, जितना कि हवा को बाँधने का प्रयास करना।''[4] इसका अभिप्राय यह नहीं है कि इसका कोई वर्णन नहीं हो सकता है यह तथ्य बिना किसी विवाद के प्रस्तुत किया जा सकता है कि संस्कृति सरीखे शब्द की परिभाषा, विशेषकर भारत के संदर्भ में कठिन है, उसका वर्णन तो सरलता से किया जा सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि संस्कृति वह समग्र संकुल है जिसमें समाज के सदस्य की हैसियत से मनुष्य द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, विश्वास, कला, कानून, रिवाज और अन्य योग्यताओं एवं अभ्यास का समावेश है। इसके अतिरिक्त संस्कृति समस्त सीखे हुए अथवा उस व्यवहार का नाम है, जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है। संस्कृति का एक अर्थ यह भी है सभ्य। सभ्य का अर्थ यह है कि जो समाज में उचित एवं संस्कारित ढंग से व्यवहार करता है उसे सभ्य कहा जाता है ठीक इसके विपरीत जो काम करता है उसे असभ्य की संज्ञा प्रदान की जाती है।

भारतीय संस्कृति एवं विरासत में इतिहास (अतीत) एवं मूल्य को समझने में मदद करती है तथा समुदायों को एकजुटता प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों, जातियों एवं भाषाओं का सम्मिश्रण है इतना ही नहीं इसमें आँचलिकता एवं भू–गर्भीय दृष्टि से प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट परम्पराएँ, वेशभूषा, रहन–सहन, भोजन विधि, लोक कलाएँ तथा भाषा–शैली आदि भी सम्मिलित हैं। नृत्य, दर्शन, आध्यात्मिकता, ज्ञान–विज्ञान, विभिन्न जीवन प्रणालियाँ, अभिवादन पद्धति, पर्व, त्यौहार, मेले, उत्सव, बाजार तथा लोक संस्कृति आदि में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

विरासत के अन्तर्गत अतीत काल अर्थात् अति प्राचीन काल के ऐतिहासिक स्मारक, गुफाएँ, प्रस्तर–शिलाएँ, पर्यटन स्थल, मठ आदि के साथ–ही–साथ अनेक स्थान ऐसे हैं जो विरासत के अन्तर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति एवं विरासत, भारत की प्राचीन सभ्यता की समृद्ध विविधता है, जिसमें अनेकानेक अनूठी और आश्चर्यजनक परम्पराएँ सम्मिलित हैं। वैश्विक धरोहर स्थलों के अतिरिक्त योग तथा आयर्वुेद जैसे अमूल्य मूल्य भी हैं जो भारत की पहचान एवं गौरव को दर्शाते हैं। भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं–साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, शिल्पकला, चित्रकला, संगीत तथा नृत्य आदि विरासत में बहुमूल्य हैं। इसमें प्राचीन सभ्यताएँ जैसे सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) और अन्य ऐतिहासिक स्थल शामिल हैं। ये भारत की गौरव गाथा के प्रतीक हैं।

भारत की राष्ट्रीय संस्कृति में आरम्भ से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धारणा में गहन आस्था व्यक्त करती आई है। यथा– ''राष्ट्रीय एकता की भावना का समुचित विकास हमें अन्य राष्ट्रों के प्रति सम्मान तथा आदर की भावना से पूरित करता है। एक सच्चा राष्ट्र–प्रेमी अन्य राष्ट्रों को भी सम्मान देते हुए उनसे भी भावनामूलक रूप में जुड़ जाता है और धीरे–धीरे अन्तर्राष्ट्रीय एकता की भावना का उदय होने लगता है जिसके लिए प्रत्येक महान व्यक्ति इसकी आकांक्षा करता है, यह मानव का अन्तिम सत्य है।''[5]

हमारी प्राचीन सभ्यता से तथा विचारधारा से जब यूरोपीय सभ्यता का सम्पर्क हुआ तब उसका सर्वाधिक कल्याणकारी प्रभाव प्रवृत्ति की दिशा में पड़ा। ''अब प्रवृत्ति क्या है? इसे ज्ञान करना हमारा प्रथम कर्तव्य बनता है। प्रवृत्ति शब्द का अर्थ है सन्यास न लेकर मरणोपर्यन्त (मृत्य पर्यन्त) चातुर्वर्ण्यविहित निष्काम कर्म करते जाना।''[6]

प्रवृत्तिवाद व्यवस्था संसार को निस्सार नहीं मानती है और न ही उसका यह भाव होता है कि मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य ध्यान और समाधि है। इसके ठीक विपरीत निवृत्ति का मार्ग सन्यास का मार्ग है। कर्म त्याग का मार्ग है। इसके साथ–ही–साथ निवृत्तिवाद का समर्थन करने वाला यह भी मानता है कि विश्व माया है एवं सारहीन है, कुछ नहीं में कुछ का भ्रम है। अतएव मनुष्य का चरम लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह सन्यास की ओर जाकर या सन्यास ग्रहण कर मोक्ष की निरन्तर खोज करे। इसके अलावा वह इस लोक को त्याग कर परलोक को सुधारने की चेष्टा में वल्लीन हो जाये। इसी भावना में आसक्ति का मार्ग ग्रहण कर हमारे देश के निवासी ने लोक की उपेक्षा कर दी। इसीलिए एक सिद्धान्त स्थापित हो गया कि–

''पश्चिमी (पाश्चात्य) देशों के निवासी जीवन के व्यूह में प्रविष्ट होकर रस तथा आनन्द की अनुभूति करने लगे और भोगवादी बन गये, परन्तु भारतवासी यह जानते हुए भी कि यह संसार मायिक है माया से निकलना अत्यंत कठिन काम है फिर भी अँधेरे में भटकते हुए जीवन के अर्थ की खोज करने लगे और आज भी उनकी यह खोज

पूर्ण नहीं हुई है।'[7]

इस प्रकार यह भटकाव अभी भी समाप्त नहीं हुआ है। यहाँ पर एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि हम यथार्थ से भटक गये हैं। भौतिकता ने मनुष्य को अंधा बना दिया है तथा वह इसी प्रवृत्ति के कारण असली मार्ग 'प्रेम' से दूरी बना बैठा है। जब तक मानवता में प्रेम का अभाव रहेगा तब मानव आदिम मानव ही रहेगा।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में अनेक तथ्यों का समावेश है जो कि परम्परागत हैं। इतना अवश्य है कि इसमें धार्मिकता और नैतिक विचारों तथा सिद्धान्तों की अधिकता है। इसमें अध्यात्म भावना प्रबल मात्रा में समावेशित है। अति प्राचीन काल से धर्म ग्रंथों (वेदों आदि।) वर्णित धार्मिक भावना, पूज्य भाव, आस्था, श्रद्धा एवं भय आदि का भी समावेश है। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने आर्य एवं अनार्य संस्कृति में सन्धि कराने का अथक एवं सराहनीय प्रयास किया जो एक संस्कृति का उत्कृष्ट नमूना है। यही प्रयास परम्परा के स्वरूप में आज भी विद्यमान है। भारतवर्ष सदैव भौतिक एवं आध्यात्मिक नियमों तथाा शक्तियों की महत्ता की ओर सचेष्ट रहकर भौतिक विज्ञानों के विकास की ओर उत्कृष्ट दृष्टिकोण अपनाकर जीवन की समुचित व्यवस्था की कला से भली–भाँति परिचित रहा है। भारतीय संस्कृति की विरासत एक ऐसा विशाल क्षीर–सागर है, जिसमें न जाने कितनी ही रंग–बिरंगी संस्कृतियों का जल और जातियों का दुग्ध एवं नवनीत (मक्खन) इसकी उपादेयता, सुस्वादता तथा स्वास्थ्यवध र्काता में असंख्य गुना वृद्धि करती आयी है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. मंदिर संस्कृति–डॉ. राजबहादुर सिंह, पृ. (निवेदन) संस्करण 2001, राज पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
2. भारतीय संस्कृति का स्वरूप–डॉ. इबतवार दशरथ तुकाराम, पृ. 15, संस्करण 2015, समता प्रकाशन कानपुर।
3. भारतीय संस्कृति की महिमा विविध आयाम–डॉ. कृष्ण भावुक, पृ. 9, संस्करण 2012, जीवन ज्योति प्रकाशन दिल्ली।
4. वही, पृ. 15
5. वही, पृ. 33
6. संस्कृति के चार अध्याय–दिनकर, पृ. 558, संस्करण 2016, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद।
7. वही, पृ. 558

Cite this Article

'*डॉ. पी.एम. भुमरे*', "*भारतीय संस्कृति एवं विरासत*", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."